विवेकानन्द केंद्र विद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रम एवं मूल्यों का उन्मुखीकरण

डॉ. अतुल कुमार*

*सहायक आचार्य, माँ सरस्वती महाविद्यालय, दमोदरा, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

E-Mail: atulkumargupta00@gmail.com

DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.17317371**
Accepted on: 15/09/2025 Published on: 10/10/2025

सारांश:

जिस प्रकार मनुष्य के शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक भोजन, व्यायाम एवं योग की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार राष्ट्र व समाज के कल्याण और विकास के लिए मूल्योन्मुखी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक होती है। किन्तु वर्तमान में विद्वानों ने शिक्षा में मूल्यों के गिरावट की ओर ध्यानाकर्षित किया है। जिसके कारण मूल्योन्मुखी शिक्षा वर्तमान की महती आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर यह भी सर्वविदित है कि किसी भी विद्यालय की शिक्षा मूल्यविहीन तो हो ही नहीं सकती किन्तु विभिन्न विद्यालयों में मूल्यों को संवर्धित करने के लिए जिन प्रयासों एवं क्रियाविधियों को अपनाया जाता है वह अपने आप में महत्वपूर्ण होता है क्योंकि उसी आधार पर छात्रों में मूल्यों को संपोषित किया जाता है। ध्यातव्य है कि स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित होकर एकनाथ रानडे जी ने भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों की श्रृंखला शुरू की, शोधार्थी ने उन्हीं विद्यालयों में से दो विद्यालयों (निरुजली, अरुणाचल प्रदेश एवं डिब्रूगढ़, असम) का चुनाव किया। प्रस्तुत शोध लेख में शोधार्थी द्वारा विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों में जिन सहपाठ्यचारी क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों में मूल्यों को संपोषित करने का प्रयत्न किया जाता है उसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध गुणात्मक शोध प्रविधि पर आधारित है जिसमें शोधार्थी द्वारा छः शोध प्रश्नों के साथ-साथ छः शोध उदेश्यों का निर्माण किया गया था। शोध कार्य में आकड़ों को एकत्र करने के लिए सहभागी अवलोकन एवं दो अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची एक शिक्षकों के लिए तथा दूसरा छात्रों के लिए का निर्माण व उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध पत्र में समस्त उदेश्यों को एक साथ प्रस्तुत करने पर शोध लेख की शब्द सीमा बहुत अधिक हो जा रही थी अतः प्रस्तुत शोध पत्र में शोध के प्रथम उद्देश्य मूल्यपरक शिक्षा के लिए विवेकानन्द केंद्र विद्यालय के विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों की संक्षिप्त व्याख्या की गयी है।

प्रमुख शब्दावली: *मूल्यपरक शिक्षा, विवेकानन्द केंद्र विद्यालय, एकनाथ रानडे।*

प्रस्तावना:

मनुष्य ने जैसे-जैसे अपने भौतिक इच्छाओं को विस्तार दिया, वैसे-वैसे उसका स्वभाव प्रकृति के साथ मित्रता के स्थान पर एक शोषक के रूप में परिवर्तित होने लगा। स्वभाव से शोषक होने के पश्चात् वह अच्छे-बुरे, गलत-सही आदि में भेद करना

भूल गया जिसका दुष्परिणाम आज समस्त मानव जाति को विभिन्न परेशानियों जैसे- आतंकवाद, धर्मवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार, चोरी, अनैतिकता, प्रदूषण आदि के रूपों में भुगतना पड़ रहा है। *"आज की शिक्षा मनुष्य को मनुष्य होने से ही वंचित कर रही है। वह व्यक्ति को वे तमाम चीज़ें सिखाती है जो मनुष्यता के लिए घातक है जैसे- प्रतियोगिता, तुलना, महत्वाकांक्षा, अहंकार, परिग्रह, स्वार्थपरकता आदि। ऐसा मालूम पड़ता है कि मनुष्य की बेहतरी के लिए किया जाने वाला उपक्रम है उसे बदतर बनाए जा रहा है"* **(कुमार, 2016)**। वर्तमान समय में अनेक प्रकार की विसंगतियों का अनुभव करते हुये विद्वानों द्वारा नैतिक एवं मूल्यपरक शिक्षा की अनुशंसा की जा रही है क्योंकि मनुष्य की अनियंत्रित भौतिक इच्छाओं एवं मनोवेगों को इसी शिक्षा के माध्यम द्वारा सही दिशा दी जा सकती है। *"द्रुत गति से होने वाले आधुनिक औद्योगिक विकास, जनसंख्या विस्फोट एवं नगरीकरण के कारण आज मानव मानसिक कुण्ठाओं तथा आर्थिक विषमताओं से त्रस्त है। इसी कारण मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मूल्यों के हास के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है हमारा समाज, हमारी शिक्षा प्रणाली"* **(नायक, 2009)**। यह सत्य है कि मूल्यों के कारण ही सहजीवन के महत्व को समझते हुये हम दूसरे व्यक्तियों की आवश्यकताओं का चिन्तन कर सकते हैं जिससे सभी विकास के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। मूल्यों के माध्यम से ही हम बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, नारी का सम्मान, मनुष्यों में कर्तव्य बोध के साथ कर्म एवं श्रम की गरिमा को स्थापित कर सकते हैं।

मूल्यपरक शिक्षा:

भारत देश एक ऐसी शिक्षा की ओर संकेत करता है, जिसमें हमारे देश के छात्रों में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित हों ताकि वह मात्र सूचनाओं के संग्रहकर्ता न बनकर आदर्श चरित्र भी प्राप्त कर सके। *"मूल्यपरक शिक्षा से हमारा तात्पर्य उस शिक्षण से है जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य समाहित हो। प्रत्येक विषय को मूल्यपरक बनाकर उनके माध्यम से विविध प्राचीन एवं अर्वाचीन जीवन-मूल्यों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में समाहित करना ताकि शिक्षार्थियों का संतुलित एवं सर्वतोमुखी विकास हो सके इस शिक्षा का प्रधान लक्ष्य है"* **(जैश्री, 2008)**। अतः मूल्यपरक शिक्षा छात्र को दिये जा रहे सैद्धान्तिक ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष की ओर संकेत करती है जिसके परिणामस्वरूप छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये जिससे उनमें मूल्यों का विकास हो तथा शाश्वत् मूल्यों का संरक्षण हो।

उद्देश्य आधारित निष्कर्ष:

उद्देश्य-1: विवेकानन्द केंद्र द्वारा संचालित विद्यालयों में प्रचलित विभिन्न मूल्यपरक शैक्षिक कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करना:

1. विद्यालय की संरचना:

विद्यालय वह धरातल है जहाँ बालकों में समाहित विविध संवेदनाओं तथा आन्तरिक शक्तियों की वास्तविक पहचान हो पाती है तथा उन्हें वास्तविक उड़ान मिलती है। विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों के अवलोकन से विदित् होता है कि शिक्षार्थियों के पढ़ने के दृष्टिकोण से ये एक उत्तम विद्यालय हैं। जहाँ छात्रों को मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ आधुनिक शिक्षण अधिगम सुविधायें प्रदान की जाती है। जहाँ शिक्षार्थी खेल के मैदान में सामूहिक रूप से नैतिकता, सहयोग तथा ईमानदारी का पाठ पढ़ते हैं वहीं दूसरी ओर कक्षा शिक्षण के माध्यम से में स्वयं के अधिगम को समृद्धशाली बनाते है। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** में उल्लेख है कि, *"एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है जिसमें प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण मौजूद होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं और जहाँ सीखने के लिए अच्छे बुनियादी ढांचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं। ये सब हासिल करना प्रत्येक शिक्षा संस्थान का लक्ष्य होना चाहिए"*। इन रूपों में विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय एक सम्पूर्ण संसाधन युक्त विद्यालय है जहां छात्रों का स्वागत किया जाता है और उनकी क्षमता के अनुरूप उन्हें पढ़ाया जाता है।

अतः विद्यालय की संरचना जहाँ शिक्षक एवं छात्रों ने मिलकर विभिन्न वृक्षों एवं पुष्पों को लगाया है उनके माध्यम से विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों के साथ-साथ राष्ट्रीय सचेतनता, सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव, मानवतावाद, समाज सेवा आदि मूल्यों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। वहीं कार्यालयों में लगे महापुरुषों के चित्रों एवं विद्यालय के दीवालों पर लिखे सुविचारों के माध्यम से उनमें नैतिकता, राष्ट्रीयता, कर्तव्यनिष्ठा, शिष्टाचार, स्वानुशासन, अहिंसा, शांति, देशभक्ति आदि मूल्यों का बोध कराया जा रहा है। निरुजली विद्यालय एक आवासीय विद्यालय है जहाँ सभी छात्रायें छात्रावास में अनुशासित होकर रहती हैं। छात्रावास में रहने से सभी को एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता पड़ती है तब बड़ी कक्षाओं की छात्रायें अपने से छोटी छात्राओं का विभिन्न कार्यों में सहयोग करती है। अतः छात्रावास में रहते हुये छात्राओं में नैतिकता, सहयोग एवं अनुशासित जीवन जीने के मूल्यों का विकास किया जा रहा है।

2. विद्यालयी दिनचर्या:

विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों की श्रृंखला में निरुजली विद्यालय एक आवासीय विद्यालय है जहाँ अध्यापकों व छात्रों की दिनचर्या प्रातःकालीन प्रार्थना जो कि सुबह 05:45 पर होती है, से प्रारम्भ होती है जबकि बाहर से आने वाले छात्रों की विद्यालयी दिनचर्या विद्यालय प्रारम्भ होने के समय अर्थात् सुबह के 08:00 बजे से प्रारम्भ होती है जो की विद्यालय के चलने तक अर्थात् दोपहर 02:20 तक रहता है। उसके बाद बाहर रहने वाले सभी छात्र अपने घर तथा विद्यालयी छात्रावास

में रहने वाली छात्रायें छात्रावास में आ जाती हैं। उसके बाद वे अल्पाहार लेकर विश्राम करती हैं तथा उसके बाद वे मैदान में खेलने जाती हैं। जहां वे खो-खो, कबड्डी तथा वालीबाल आदि खेलों को अपने खेल में प्राथमिकता देती हैं। विद्यालय दिनचर्या के अनुसार प्रतिदिन सायंकालीन प्रार्थना का आयोजन होता है यह प्रार्थना अलग-अलग दिन के अनुसार अलग-अलग होती है। इन सब क्रियाकलापों के बाद छात्राओं का अध्ययन सत्र होता है। जिसमें अध्यापकों का कार्य छात्राओं पर अवलोकन करने तथा विद्यार्थियों में किसी प्रकार का संशय उत्पन्न होने पर उसे दूर करने का होता है।

इस क्रियाकलाप के पश्चात् छात्रायें रात्रि भोजन के लिए जाती हैं। शोधार्थी ने अवलोकन करने पर यह पाया कि सभी छात्रायें सुव्यवस्थित कतार में आती थी तथा अपना भोजन लेकर व्यवस्थित कुर्सी-मेज पर बैठकर सभी के आने का इंतजार करते थी। तत्पश्चात् जब सभी भोजन प्राप्त कर लेते हैं तब भोजन मंत्र के बाद ही सभी भोजन प्रारंभ करते है। भोजन करने के पश्चात् सभी को अपनी थाली अपने आप से ही धोना होता है। **जैश्री (2008)** के अनुसार, *"मूल्यों की शिक्षा विभिन्न विद्यालयी क्रियाकलापों में व्याप्त रहती है"* । अतः विद्यालय दैनंदिन का प्रभाव छात्रों पर पड़ता है इस बात की पुष्टि पूर्व के शोधों से भी होती है। प्रत्येक विद्यालय चाहे वह आवासीय हो या गैर आवासीय सभी का एक सुव्यवस्थित दिनचर्या होती है जिसके अंतर्गत प्रार्थना, विद्यालयी दिनचर्या, अध्ययन सत्र, खेलने का समय, भोजन व्यवस्था, कक्षा शिक्षण, आवासीय सुविधा आदि सम्मिलित रहते हैं तथा उसी दिनचर्या के अनुरूप शिक्षक एवं छात्र व्यवहार करते हैं। विवेकानन्द केंद्र विद्यालय निरुजली एवं डिब्रूगढ़ भी सुव्यवस्थित दिनचर्या का अनुसार ही समस्त क्रियाकलाप का अनुसरण करते है जिसके माध्यम से वह छात्रों में कर्तव्यनिष्ठा, समय परायणता, नियमितता, समय का सदुपयोग, मित्रता, स्वाध्याय आदि मूल्यों को बड़ी ही सहजता के साथ पिरोया जा रहा है।

3. प्रार्थना:

3.1 प्रातःकालीन प्रार्थना: विद्यालय में प्रातःकालीन 05:35 तक पर सभी को विद्यालय के असेंबली प्रांगण में आ जाना होता है जहां 05:45 से प्रार्थना प्रारंभ होती है। विद्यालय की दिनचर्या प्रातःकालीन प्रार्थना जो कि 5:45 प्रारम्भ पर होती है, से दिन की शुरुआत होती है। प्रातःकालीन प्रार्थना की शुरुआत *ऐक्य मंत्र* से होती है तत्पश्चात् कभी-कभी भगवद् गीता के श्लोकों का उच्चारण होता है। कभी कर्मयोग श्लोक होता है। है। कर्मयोग श्लोक भी भगवद् गीता के ही श्लोक है किन्तु उसमें निष्काम भाव से प्रभु के लिये किये जाने वाले कर्मों के बारे में बताया गया है। उसके पश्चात् योग होता है और अंत में केंद्र प्रार्थना होती है तथा यह 06:20 समाप्त हो जाती है।

3.2 सायंकालीन प्रार्थना : विद्यालय में सायंकालीन दिनचर्या के अनुसार प्रतिदिन शाम 6:00 बजे पुन: सभी सायंकालीन प्रार्थना के लिए एकत्रित होते हैं। प्रार्थना ओमकार के साथ प्रारंभ होती है फिर केंद्र प्रार्थना होती है उसके बाद दो-तीन भजन होता है। यह प्रार्थना अलग-अलग दिनों के अनुसार अलग-अलग होती है। सोमवार को शिव जी का भजन शिवनामावल्यष्टकम्, मंगलवार को रामचरित मानस या हनुमान चालीसा का पाठ, बुधवार को लिंगाष्टकम जो कि शिवजी या गणेश जी को समर्पित है, गुरुवार को अच्युताष्टकम, शुक्रवार को महिषासुरमर्दिनी स्रोतं, शनिवार को निर्वाणषटकम् तथा रविवार को सूर्याष्टकम् तथा गीता के पंचम अध्याय से श्लोक का वाचन होता है। प्रत्येक विद्यालय में प्रार्थना का आयोजन किया जाता है लेकिन विवेकानन्द केन्द्र के विद्यालयों में प्रार्थना का स्वरूप बहुत ही व्यवस्थित एवं व्यापक है जिसके माध्यम से छात्रों में सरलता, नैतिकता, मानवता, आध्यात्मिकता, अच्छे तौर-तरीके, आत्मसंयम, सत्यता, सहनशीलता आदि मूल्यों को विकसित किया जाता है।

4. शैक्षिक स्पर्धा:

विवेकानन्द केन्द्र विद्यालयों में शैक्षिक स्पर्धा की एक लम्बी श्रृंखला है जिसके अन्तर्गत शैक्षिक विषयों से लेकर, खेल, पहेली तथा अन्य विषयों को सम्मिलित किया जाता है। विद्यालय में शैक्षिक प्रतियोगिताओं का विज्ञान प्रदर्शनी, एन.एम.एम.एस. (नेशनल मींस कम मेरिट स्कॉलरशिप), एन. टी. एस. ई. (नेशनल टैलेंट सर्च एग्जामिनेशन), विद्यार्थी विज्ञान मंथन (VVM), एस. एम. एस.(स्टेट मेरिट स्कॉलरशिप), इसके अलावा विज्ञान पहेली तथा साथ ही साथ अन्य विषयों जैसे सामाजिक विज्ञान, अंग्रेजी आदि विषयों की पहेली तथा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। विद्यालय में पहेली प्रतियोगिता जो कि विद्यालय स्तर से प्रारंभ होकर, राज्य स्तर से होते हुए राष्ट्रीय स्तर तक जाता है। गीत प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, साइंस कांग्रेस, साइंस सेमिनार, गीता श्लोकों के पाठ, पेंटिग प्रतियोगिता, देशभक्ति गीतों पर प्रतियोगिता तथा कई विषयों पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन होता है। खेलों में खो-खो, वालीबाल, रिले रनिंग, योग आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन होता है। राज्य छात्रवृत्ति, राष्ट्रीय छात्रवृत्ति (NMMS), (NTSE) आदि महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। **विद्यार्थी विज्ञान मंथन:** विद्यार्थी विज्ञान मंथन (VVM) यह प्रतियोगिता विज्ञान एवं तकनीकी विभाग भारत सरकार तथा विज्ञान भारती दोनों के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया जाता है। जिसमें कक्षा 6 से 11:00 तक के विद्यार्थी प्रतिभाग करते हैं यह एक ऑनलाइन प्रतियोगिता होती है जिसमें समय सीमा तय होती है यह विद्यालय स्तर से शुरू होता है तथा राष्ट्रीय स्तर तक होता है। **साइंस कांग्रेस:** साइंस कांग्रेस एक राज्य स्तरीय

प्रतियोगिता है। जिसमें किसी एक प्रकरण अथवा विषय पर विद्यार्थी समूह को अपने स्तर से खोज करना होता है और फिर पुनः उसका प्रस्तुतीकरण करना होता है।

विद्यालय में विभिन्न शैक्षिक प्रतियोगिताओं साहित्य से संबंधित प्रतियोगिताएं समय-समय पर आयोजित होती रहती हैं। उनमें वाद विवाद, कविता प्रतियोगिता जिसमें छात्र किसी विषय पर पूर्व रचित कविता को या अपनी स्वयं की किसी कविता को याद करके सुबह प्रार्थना में या किसी विशेष दिवस पर सुनाते हैं। भाषण, एक्स-टेम्पो भाषण, नाटक प्रतियोगिता, गीत प्रतियोगिता, नृत्य प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता, थॉट एक्सप्लेनेशन कंपटीशन, पोस्टर प्रतियोगिता, स्लोगन लिखने की प्रतियोगिता, पहेली तथा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इसके साथ-साथ खेल प्रतियोगिताओं में वालीबाल, खो-खो, फुटबॉल, कबड्डी, रोप मलखंभ, पोल मलखंभ, 100 मीटर तथा 200 मीटर की रेस, डंबल आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। शिक्षक ने बताया कि इन खेलों की प्रतियोगिताओं का आयोजन हम हाउस के अनुसार करते हैं। विद्यालय को 12 हाउसेस में बांटा गया है तथा समय-समय पर अंतर वीकेवी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन होता है। इन शैक्षिक स्पर्धाओं के आयोजन का उद्देश्य छात्रों को शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के साथ-साथ उनका मानसिक विकास करना भी होता है। इन प्रतियोगिताओं का स्वरूप ऐसा होता है जिसमें छात्र एकल एवं सामूहिक रूप से भाग लेते है। इन स्पर्धाओं के माध्यम से विवेकानन्द केन्द्र के विद्यालय छात्रों में आत्मविश्वास, समय का सदुपयोग, अनुशासन, सहयोग की भावना, व्यवहार कुशलता, ईमानदारी, नेतृत्व आदि मूल्यों को संपोषित करने का प्रयत्न करते हैं।

5. भोजनालय:

विवेकानन्द केंद्र विद्यालय निरुजली में छात्रों को भोजन करने हेतु भोजनालय की व्यवस्था है। जहां सभी छात्र समूह में बैठकर भोजन करते हैं। भोजनालय से छात्रों को सुबह का नाश्ता, विद्यालय खुला रहने पर सभी छात्रों को खिचड़ी, यह खिचड़ी सभी छात्रों को उनकी कक्षाओं में मिलती है, उसके पश्चात् छात्रावास में रहने वाली छात्राओं को विद्यालय समाप्त होने के बाद उन्हें दोपहर का भोजन, शाम को स्वाध्याय के बाद उन्हें हल्का नाश्ता एवं रात्रि में भोजन दिया जाता है। शोधार्थी ने अवलोकन में पाया कि छात्राएं चाहे सुबह का नाश्ता हो, दोपहर का भोजन हो एवं रात्रि का भोजन वह उसे लेने के लिए कतारबद्ध तरीके से आती हैं। भोजन लेने के पश्चात् सभी छात्रायें वहां पर लगे कुर्सी-मेज पर जाकर बैठ जाती हैं तथा सभी को भोजन मिलने का इंतजार करती हैं जब सभी को भोजन प्राप्त हो जाता है तो सभी साथ में मिलकर भोजन मंत्र करती हैं। भोजन मंत्र के द्वारा वह ब्रह्मा को प्रणाम अर्पित करती हैं उसके बाद सभी भोजन करना प्रारंभ करती हैं। भोजन करने के उपरांत सभी छात्राएं अपनी थाली स्वयं से धोती हैं तथा उसे उचित स्थान पर रखती हैं। विवेकानन्द केंद्र विद्यालय के भोजनालय में शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन बनते हैं। यह भोजन विद्यालय द्वारा प्रदान की गई भोजन सूची

(मीनू) के अनुसार बनती है। भोजन सूची का निर्माण सभी शिक्षक एवं प्रधानाध्यापिका जी मिलकर करती हैं तथा यह भोजन सूची आवश्यकतानुसार समय-समय पर बदलती रहती है। जिसमें मौसम के हिसाब से सब्जियों, विभिन्न प्रकार के दालों एवं छात्राओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया जाता है। छात्रावास में भोजन की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। छात्रावास में जब भोजन का निर्माण होता है तो किसी एक अध्यापक जिनकी पहले से ही नियुक्ति भोजन की देख-रेख के लिए की जाती है। उनके द्वारा वहां पर निगरानी की जाती है तथा छात्रों को जब तक भोजन प्राप्त नहीं हो जाता तथा छात्रों को भोजन मंत्र कराने तथा यह ध्यान देना कि किसी छात्र को भोजन कम तो नहीं हुआ यह सब शिक्षक द्वारा देखा जाता है। विवेकानन्द केन्द्र द्वारा संचालित विद्यालयों में भोजनालय की भोजन व्यवस्था के माध्यम से छात्रों में त्याग, संयम, प्रेम, समानता, आध्यात्मिकता, अनुशासन, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, एक दूसरे की भलाई आदि मूल्यों को बड़े ही सहज रूप से प्रदान कर रहे हैं।

6. विद्यारम्भ संस्कार:

भारतीय संस्कृति में छात्र जब घर से दूर गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने के लिए जाते थे तब उनका उपनयन संस्कार होता था। उसी प्रकार विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय में अप्रैल माह में जब नया सत्र प्रारम्भ होता है तो वहाँ विद्यारम्भ संस्कार होता है जिसमें सभी शिक्षक व छात्र मिलकर भगवान का भजन गाते है जिसे विद्यालय में *नाम कीर्तन* के नाम से जाना जाता है। बाहर से ब्राह्मणों को बुलाया जाता है जो कि मंत्रोचारण करते हैं। हवन होता है जिसमें सभी छात्र व शिक्षक मिलकर आहुति देते हैं। उसके पश्चात् सभी शिक्षकों और छात्रों को प्रसाद वितरित किया जाता है तथा नये सत्र में प्रवेश के लिए सभी शिक्षकों एवं छात्रों को शुभकामनायें दी जाती है। *शिक्षकों से इस विषय पर पूछने पर उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति के अनुरूप हम भी किसी भी नए कार्य को करने से पूर्व इष्ट देवों की पूजा करते हैं और यह प्रार्थना करते हैं कि हमें इस कार्य में सफलता मिले।* विद्यारंभ संस्कार के केंद्र में नव-विद्यार्थी होते हैं। इन्हें संस्कार के माध्यम से उत्कृष्ट शिक्षा मिले इसकी कामना कराई जाती है। विद्यार्थी इसमें सहभाग करके अपनी संस्कृति को अनुभव करते हैं। यह किसी भी संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तान्तरण का अनोखा माध्यम है। विद्यालय में विद्यारम्भ संस्कार द्वारा छात्रों में आध्यात्मिकता, नैतिकता, कृतज्ञता, प्रेम, सद्भावना आदि मूल्यों को बड़ी ही सहजता के साथ छात्रों के व्यवहार में पिरोया जा रहा है।

7. सरस्वती पूजा:

भारतीय परम्परा में माँ सरस्वती को विद्या की देवी माना जाता है तथा यह माना जाता है की माँ सरस्वती की पूजा करने से ज्ञान और यश में वृद्धि होती है साथ ही साथ सद् बुद्धि की भी प्राप्ति होती है। इसलिए विद्यालयों में बसन्त पंचमी के दिन माँ सरस्वती की पूजा व आराधना की जाती है। विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय में भी सरस्वती पूजा का आयोजन होता है।

जिसमें सभी शिक्षक, छात्र एवं विद्यालय के अन्य कर्मचारी भी पूरे जोश व उत्साह के साथ प्रतिभाग करते हैं। उस दिन समस्त छात्र अपने घरों से थोड़ा-थोड़ा दाल, चावल लाते है। उसे मिलाकर खिचड़ी बनती है। माँ सरस्वती की पूजा करने के लिए बाहर से ब्राह्मणों को बुलाया जाता है। जिससे पुरे विधि विधान और मंत्रोचारण के साथ माँ सरस्वती की पूजा की जाती है तथा पूजा समाप्त होने के बाद हवन होता है। उसके पश्चात् सर्वप्रथम विद्यालय में बाहर से आये हुये अतिथियों को प्रसाद के स्वरूप खिचड़ी दिया जाता है। उसके पश्चात् विद्यालय के समस्त शिक्षकों और छात्रों को प्रसाद के रूप में खिचड़ी वितरित की जाती है। छात्रों ने बताया कि सरस्वती पूजा के दिन हम लोग सभी गुरुजी के साथ मिलकर साफ-सफाई और पूजा की तैयारी करते हैं। दूसरे विद्यालयों के छात्र भी हमारे यहाँ सरस्वती पूजा देखने के लिये आते हैं। हम उन्हें भी प्रसाद देते हैं। प्रसाद देने के साथ ही उनसे मित्रता भी हो जाती है। विद्यार्थियों में धार्मिक विश्वास के माध्यम से संस्कृति के अच्छे तत्वों को सीखाने का यह एक पौराणिक माध्यम है जिसे शिक्षकों द्वारा आज भी नवीनता और पूरी रुचि के साथ अपनाया जाता है। बच्चे इस तरह के कार्यक्रम में खूब बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। छात्रों में संस्कृति ग्रहण और धार्मिक सद्भावना के साथ-साथ उनमें आध्यात्मिकता, नैतिकता, सहयोग, भाईचारा, एकता में शक्ति, सज्जनता आदि मूल्यों को बड़ी ही सहजता के साथ उनके अन्दर समाहित किया जा रहा है।

4.9 अध्यापन पूर्व तैयारी:

विद्यालय में शिक्षा प्रदान करने के भी अपने नैतिक नियम होते हैं जिसमें विषय से भटके बिना विषय वस्तु को छात्रों को पढ़ाना होता है यह तभी संभव है जब शिक्षक अध्यापन पूर्व तैयारी किए रहें। अध्यापन पूर्व तैयारी से अभिप्राय पाठयोजना के निर्माण से है। विवेकानंद केंद्र में सभी शिक्षक प्रकरण की पाठ योजना का निर्माण करते हैं जिसमें पाठ की प्रस्तावना, पाठ से संबंधित कठिन शब्द, पाठ का सारांश, पाठ का आदर्श वाचन, लेखन, कठिनाई पर प्रश्नोत्तर आदि गतिविधियों के अनुरूप पाठ योजना का निर्माण करते हैं। ताकि छात्र सरलता से पाठ को समझ सकें। इस पाठ योजना को साप्ताहिक रूप से प्रधानाध्यापिका जी को दिखाया जाता है। सम्पूर्ण प्रकरण के माध्यम से एक विशेष व्यवस्था देखने को मिलती है जिससे शिक्षक अपने विषय के प्रति जिम्मेदार हैं और प्रधानाध्यापिका के प्रति भी सम्मान की भावना रखते हैं। विद्यालय में अवलोकन के दौरान यह पाया गया कि शिक्षक पाठयोजना बनाते समय विद्यार्थियों की रुचि का ध्यान रखते हैं। अध्यापन से पूर्व अध्यापक अपने विषय का अध्ययन भी करते हैं जिससे कक्षा में शिक्षण के समय कोई बाधा न उत्पन्न हो। कक्षा शिक्षण के समय जब विद्यार्थी प्रश्न पूछते हैं तो ऐसे में शिक्षक को सभी प्रश्नों का जवाब पता होना कई बार संभव नहीं होता है लेकिन बिना किसी झिझक के यहाँ शिक्षक अपनी कमी को स्वीकार कर लेते हैं तथा अगले दिन की कक्षा में छात्र द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर बताने के लिए कहते हैं। शिक्षकों जिन प्रश्नों का जवाब नहीं दे पाते हैं उन प्रश्नों को कक्षा के बाद वे

अध्ययन करते हैं जिससे छात्रों की शंका का समाधान किया जा सके। एक शिक्षक से इस विषय पर पूछने पर उन्होंने कहा कि *कक्षा में पढ़ाते समय हम लोग इस बात का ध्यान रखते हैं कि सभी विद्यार्थी पढ़ाये गए विषय को आसानी से समझ सकें। पढ़ाने से पूर्व हम लोग पाठयोजना का भी निर्माण अवश्य करते हैं। इससे पढ़ाने में सुविधा होती है साथ ही नियत समय पर पाठ्यक्रम भी समाप्त हो जाता है। पढ़ाने के दौरान कई बार विभिन्न उपकरणों का सहारा भी लिया जाता है जिससे विद्यार्थी को विषयवस्तु का अधिक ज्ञान कराया जा सके।* शिक्षक द्वारा बतायी गयी बातों का अवलोकन के दौरान पुष्टि भी किया गया। एक शिक्षक के लिए शिक्षण मूल्य आवश्यक होता है वह शिक्षण के दौरान अवलोकित की जा सकती है। इसके माध्यम से विद्यार्थी भी अपने काम के प्रति ज़िम्मेदारी का भाव रखते हैं। छात्र शिक्षकों के कार्यों का अनुसरण करते है जिसके द्वारा उनमें कर्तव्यनिष्ठा, नियमितता, समयपरायणता, सरलता आदि मूल्यों का विकास किया जा रहा है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध लेख विवेकानन्द केंद्र विद्यालयों के मूल्यपरक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर आधारित है। इसमें मूल्य संवर्धन के लिए कई कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया है। शिक्षक इस शोध अध्ययन के शिक्षण के दौरान नैतिक और चारित्रिक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते हैं जिससे बच्चे का नैतिक विकास हो सके। बच्चों को शिक्षा के माध्यम से प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्तर से कौशल को सिखाया जा सकता है। शिक्षक अपने शिक्षण में संस्कृति के संवर्धन के लिए मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं जिससे वर्तमान में व्याप्त संस्कृति संबंधी समस्या का समाधान हो सकता है। बच्चों में देश प्रेम का होना अति आवश्यक है ऐसे में यह शोध शिक्षकों के लिए मील का पत्थर साबित हो सकता है। शिक्षक यह अध्ययन कर सकते हैं कि केंद्र में किस प्रकार से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में देश प्रेम की भावना जागृत की जाती है इसे वे अपने शिक्षण में शामिल कर सकते हैं। मूल्य व्यक्ति के नैतिक कर्तव्यों का बोध कराते हैं और उसकी क्षमता के बेहतर पक्ष को आगे की ओर उन्मुख करते हैं। मूल्य व्यक्ति को अपने साथियों के साथ सौहार्दपूर्ण, शालीनता और सहयोगात्मक जीवन जीने में मदद करते हैं। जिस प्रकार शरीर के स्वास्थ्य के लिए हृदय का स्वस्थ और सुदृढ़ होना जरूरी है, उसी प्रकार राष्ट्र और समाज के विकास एवं उनको स्वस्थ रखने के लिए मूल्यनिष्ठ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार यदि हम विवेकानन्द केन्द्र द्वारा संचालित विद्यालयों के शैक्षिक कार्यक्रमों का अध्ययन करते हैं तो यह दृष्टिपादित होता है कि विद्यालय विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा प्रदान कर रहें हैं।

सन्दर्भ:

- व्यास, महावीर प्रसाद (2012). *कथा विवेकानन्द शिला स्मारक की* : विवेकानन्द केंद्र हिन्दी प्रकाशन विभाग, योगक्षेम गीता भवन, जोधपुर, राजस्थान
- लाल, रमन बिहारी (2011). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत* : रस्तोगी पब्लिकेशंस, मेरठ दिल्ली
- अहूजा, राम (2016). *सामाजिक समस्याएं,* रावत पब्लिकेशनस : सत्यम अपार्टमेंट्स, सेक्टर-3 जवाहर नगर, जयपुर - 302004
- मिश्र, डॉ. एस.एस. (2011). *स्वामी विवेकानन्द : शिक्षा-दर्शन* : शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड, प्रयागराज - 211002